International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2016; Page No. 38-39

हिंदी कहानी और नयी अर्थव्यवस्था का अमानवीय रूप

मीनू देवी
पीएचडी शोधार्थी महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय

वर्तमान अर्थव्यवस्था यानी नयी अर्थव्यवस्था भूमंडलीकरण की व्यवस्था है, इसको फ्रेडरिक जेमसन ने 'लेट केपिटलिज़्म' अथवा बहुराष्ट्रीय पूँजीवाद माना है। [1] इसके रचे जाने का एक सुदीर्घ इतिहास है। कहें एक अच्छी खासी विश्व परियोजना है। विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष; दोनों 27 दिसंबर 1945, विश्व व्यापार संगठन; 1995; अथवा पूर्वनाम गैट, संयुक्त राष्ट्र संघ; 1945 और फिर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, इन सबने मिलकर वर्तमान वैश्विक पूँजीवाद अथवा भूमंडलीकरण को संभव बनाया। ब्रेटन वुड्स; 1944 के गर्भ से इनमें से आरंभिक चार संस्थाओं का जन्म हुआ। अमेरीका के शहर हेम्पशायर में ब्रेटन वुड्स नामक स्थान है। जहाँ जुलाई 1944 में यह संधि अमेरीकी राष्ट्रपति फ्रेकलिन डी रूजवेल्ट और ब्रिटिश प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल समेत 730 प्रतिनिधियों ने ब्रेटन वुड्स की संधि और आगे बनने वाले विश्व क्रम; वर्ल्ड आर्डर का रूपाकार निर्मित किया। [2]

फ्रेकफर्ट स्कूल के प्रमुख चिंतक थियोडोर अडोर्नो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति उद्योग' में संस्कृति में घुलती तात्कालिकता और उपभोक्ता प्रवृत्ति की ओर इशारा करते हुए लिखा है– ''संस्कृति की विशुद्ध तात्कालिकता नहीं होती, जहां कहीं वह जनता को उपभोक्ता की तरह मनमाने ढंग से अपने उपयोग की छूट देती है, वहां वह जनता के साथ छल करती है। बाज़ार का नियंत्रण आज निस्संकोच ढंग से संस्कृति में सडांध भर रहा है।'' [3] इस तरह देखें तो बाज़ारवाद– उपभोक्तावाद भूमंडलीकरण की संस्कृति के उपकरण हैं। जिसमें विभिन्न अवधारणाएं भूमंडलीकरण की संस्कृति को खाद–पानी पहुँचाती हैं।

बीते दो दशकों में लिखी गई कहानियाँ किसी वाद, विचारधारा और कहानी आंदोलन से बंधी नहीं हैं। यहाँ रचनारत कहानीकार कई पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इसलिए यहां वैविध्य जीवन और समाज के अधिकांश को प्रतिध्वनित करता है। फिर भी शहरी–कस्बाई मध्यवर्गीय निम्नमध्यवर्गीय जीवन बहुलता में देखने को मिलता है। विभिन्न कस्बों, अंचलों, क्षेत्रों को भी यहां देखा जा सकता है। किसान जीवन और कृषि–संस्कृति वहां की विसंगतियाँ–विडंबनाएँ–आकांक्षाएँ अपवाद रूप में ही देखने को मिलती हैं। स्वयं प्रकाश की नैनसी धूड़ा, विद्यासागर नौटियाल, संजीव की कुछ कहानियां, कैलास बनवासी की 'बाजार में रामधन' और अनुज की कहानी 'खूँटा' आदि कुछेक कहानियां किसान जीवन पर केंद्रित हैं। शहरी मध्यवर्ग की चिंताएँ–आशाएँ–आकांक्षाएँ कहानी में प्रचुर मात्रा में चित्रित–वर्णित मिलती हैं। यहाँ भी वैविध्य कम नहीं है। इस दौर के अधिकांश लेखक भूमंडलीकरण की अपसंस्कृति का विरोध कहानी में व्यंजित आचरण से, कथ्य से, भाषा और शिल्प के गैर–चौकाउ रूपों से कर रहे हैं। रमाकांत श्रीवास्तव 'चैंपियन' कहानी में इस वर्तमान उतावले, विज्ञापनी दौर और बाज़ारवाद की प्रतिस्पर्धा चकाचौंध को सामने लाते हैं।

इस दौरे की सभी उल्लेखनीय कहानियाँ किसी एक शोध–पत्र में आसानी से नहीं आ सकतीं। बहुत कुछ के छूट जाने की गुंजाइश बनी रहती है। लेकिन बहुत संक्षेप में संकेत रूप में भूमंडलीकरण की संस्कृति का मुखर विरोध करने वाली, भाषा और शिल्प में गैर–विज्ञापनी, चौंकाउपन, अतिरंजनाओं में रहित कुछ कहानियों का जिक्र करना हो तो सबसे पहले शेखर जोशी की 90 के बाद प्रकाशित 'विडुवा' और 'पुराना घर' कहानी की बात करना प्रासंगिक होगा। 'विडुवा' कहानी में अपने भतीजे की शादी में शहरी रहन सहन की चकाचौंध से प्रभावित छोटे ठाकुर मान किए बैठे हैं। वे बड़े ठाकुर से कहकर बारात के साथ वीडियो की व्यवस्था भी चाहते हैं। वीडियो रिकार्डिंग करने वाला आता है। शहरी रंग ढंग में सब कुछ होता है। यह कहानी का संक्षेप–सार है। कहानी में इस शहरी शादी के इंतजाम के बारे में कहानी का एक कथन है– ''नाश्ते के लिए प्लेटें भर–भरकर मिठाई–नमकीन चाय–शर्बत और ठंडी बोतलें लेकर नौकर चाकर इधर–उधर घूम रहे थे। जो जी चाहे लो, जितना जी चाहे लो। हजामत बनाने के लिए नाउ, जूते चमकाने के लिए पालिश वाला और कपड़े प्रेस करने के लिए धोबी अलग से तैनात थे। यह एक आतंककारी अनुभव था। ऐसी सुविधाजनक स्थितियों में भी वे लोग कभी–कभी असहज हो उठते थे।'' [4] यहां अतिरिक्त का सौंदर्य असहज और आतंककारी है। भूमंडलीकरण की संस्कृति इसे बतौर जीवन–शैली के रूप में प्रस्तुत कर रही है। इस कहानी में सधे ढंग से इस सौन्दर्य बोध की आलोचना है।

मनोज रूपड़ा ने अपनी कहानी 'साज–नासाज' में शिल्प से अधिक मदद लेते हुए बाज़ार–प्रेरित तकनीकी परिवर्तन से सौंदर्यबोध, जीवन और व्यक्ति में होने वाले त्रासद प्रभाव का वर्णन मार्मिक रूप में किया है। इस परिवर्तन का सूत्रधार एक नया वाद्य यंत्र है सिंथेसाइजर। जिसने पारंपरिक वाद्यों से जुड़े लोगों को इतिहास के कूड़े में फेंक दिया है। कहानी का अंश है, ''मैंने कुछ सोचते हुए कहा, ''यह एक जापानी सिंथेसाइजर है। 'नहीं' उसने ऊँची आवाज में कहा, ''यह एक तानाशाह है। हत्यारा है। इसी की वजह से दास बाबू और फ्रांसिस की जान गई। यही हम सबकी बदहाली का एकमात्र जिम्मेदार है।'' [5] यह एकरूपता, वर्चस्व की संस्कृति, बाजारवादी उपयोगितावाद और समन्वय को गतकालिक बना देने का विरोध करती कहानी है। ओमा शर्मा की कहानी 'भविष्य दृष्टा' इस दौर में बढ़ती–पनपती अतार्किकता, ज्योतिष, जादू टोने की निरर्थकता को विडंबना के रूप में कहती है। वंदना राग की कहानी 'यूटोपिया में साम्प्रदायिकता के कारण और बेरोजगारी का संबंध जोड़ा है।

संजीव की कहानी 'ब्लैक होल' प्रतिस्पर्धा के जीवन की विडंबनात्मक त्रासदी की कहानी है। वहीं 'लिटरेचर' कहानी में बाजारवाद ने कैसे अनुपयोगी को उपयोगी बना दिया है, दिखाते हैं। 'हत्यारे' कहानी में संजीव ने साम्राज्यवादी लूट को नए तौर तरीकों और भूमंडलीकृत दुनिया में संसाधनों की अमानवीय लूट की कथा कही है।

उदय प्रकाश की कई कहानियाँ हमारे समय–समाज की त्रासदी, संकट को यातना की भाषा में व्यक्त करती हैं। 'पॉल गोमरा का स्कूटर' उपभोक्तावाद से हारते आम इंसान की कहानी है। इनकी कहानियां प्रायः एक मुद्दे या विषय पर न टिकी रहकर हमारे समय की कथा कहती हैं। इसलिए ये प्रायः लंबी होती हैं। 'मोहनदास' कहानी अस्मिता के छिन जाने की कहानी लगती है। अखिलेश इस दौर के महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं। 'शापग्रस्त' कहानी में उपभोक्तावाद की छलपूर्ण दुनिया को, सुख की अनंत लालसा को, उसकी व्यर्थता को बताते हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि इस दौर की कहानियाँ नयी अर्थव्यवस्था के अमानवीय चेहरे को प्रकट करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जेमसन, फ्रेडरिक, पोस्ट मार्डनिज्म और द कल्चरल लॉजिक ऑफ लेट कैपिटलिज्म, वरसो प्रकाशन, 1990, पृ.सं.6
2. http://en.wikipedia.org/wiki/Bretton_woods_system, 28.dec,2011
3. अडोर्नो, टी.डब्ल्यू, संस्कृति उद्योग, ग्रंथ शिल्पी, 2006, पृ.सं.141
4. जोशी, शेखर, विडुवा, संकलित कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, पहला संस्करण 2008, पृ.सं.17
5. रूपड़ा, मनोज, साज–नासाज, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ; 1990–2000 पीपीएच, प्र.सं.2010, पृ.सं.231